temple for the assembly and erection.

Impressively standing at a height of 161.75 feet, with a length of 380 feet and a width of 249.5 feet, the three-story temple comprises five mandaps—Nritya Mandap, Rang Mandap, Gudh Mandap, Kirtan Mandap, and Prarthana Mandan—along with the Main Shikar. It is a marvel of architecture, constructed using 26,500 Pink Bansi Paharpur stones, designed to endure for over a thousand years without incorporating steel. Each stone have been carefully inspected by National Institute of Rock Mechanics (NIRM) for its physical properties.

The temple's structural integrity is reinforced to withstand seismic activities of Zone 4. The ground floor boasts 166 pillars, the first floor 142, and the second floor 82, including 6 Makrana Marble pillars on each floor, adorned with intricate carvings of over 10,000 Moortis and themes.

Teak wood sourced from the Maharashtra Forest Department, seasoned in Nagpur, is used for the temple's 46 wooden doors, with 14 doors on the ground floor embellished with gold plating. The opulent flooring, covering an area of 80,000 square feet, is done with 35mm thick white Makrana Marble, featuring an inlay of 15mm thick coloured marble stones.

A special highlight of the temple is the mechanism devised by the Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, where during the auspicious day of Ram Navami, Surya Kiran will fall on the forehead (Surya Tilak) of Shri Ram.

Pranpratishtha at Shri Ram Janmbhoomi Temple is a historic day for the nation. To make this moment truly unique, Department of Posts has conceptualized a set of six stamps on Shri Ram Janmbhoomi Temple. These stamps have been printed with the water and sand from Ram Janmbhoomi, carrying the consciousness and blessings of Shri Ram. The stamps have the fragrance of sandal wood signifying the fragrance of divinity. To make these stamps radiant of the divine light, parts of the Miniature sheet is gold foiled.

Department of Posts is delighted to release Miniature Sheet consisting six commemorative postage stamps on Shri Ram Janmbhoomi Temple and invites every being to seek blessings of Shri Ram for virtuous, blessed and meaningful life.

Credits:

Miniature Sheet/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet : Sh. Sankha Samanta

Text : Referenced from content provided by Proponent

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग : 500 पैसे (6)
Denomination : 500 p (6)

मुद्रित मिनियेचर शीट : 10,00,000
Miniature Sheets Printed : 10,00,000

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट
Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer : Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

श्री राम जन्मभूमि मंदिर

भारतीय जीवनशैली दर्शन और नैतिकता के ताने–बाने से बनी है। धर्म शब्द का अर्थ नैतिकता और नैतिक मूल्य है। ''धर्म'' शब्द की उत्पत्ति ''धृ'' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है धारण करना। अतः धर्म मानव सभ्यता के भीतर की वह शक्ति है, जो उसकी स्थिरता और विकास को बनाए रखती है।

'रामो विग्रहवान् धर्मः' का अर्थ है कि श्री राम धर्म के अवतार हैं। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में श्री राम को 'धर्मविग्रह' कहा है, अर्थात् भगवान के ऐसे स्वरूप जिन्होंने लोक कल्याण के लिए अवतार लिया। महर्षि वेद व्यास ने कहा कि श्री राम का अवतार सिर्फ राक्षसों का वध करने के लिए ही नहीं बल्कि मानव–मात्र को धर्म की शिक्षा देने के लिए हुआ। श्री राम के आदर्श आचरण में धर्म के दस गुण अर्थात् धैर्य, क्षमा, आत्मनियंत्रण, निःस्वार्थभाव, पवित्रता, इंद्रीय संयम, विवेक, ज्ञान, सत्य और दया प्रतिबिंबित होते हैं।

श्री राम के अनुकरणीय आदर्श आचरण का एक मूलभूत सिद्धांत यह है कि मनुष्य को सदैव स्व का ज्ञान होना चाहिए। यदि मनुष्य को आत्मज्ञान हो और वह अपने आचरण को उसी प्रकार नियंत्रित करे तो समाज में व्याप्त समस्याओं का इससे उपयुक्त कोई और समाधान नहीं हो सकता। श्री राम का जीवन और उनके मानवीय गुण आज के युग में अपने मन–मस्तिष्क को नियंत्रित करने और एक निरंतर विकासशील व परिवर्तनशील देश के परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

अयोध्या में स्थित श्री राम जन्मभूमि मंदिर अपने भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक महत्व और स्थापत्य शैली की दृष्टि से एक अनूठा मंदिर है। पवित्र सरयू नदी के तट पर स्थित अयोध्या नगर को राम का ही स्वरूप माना जाता है। अयोध्या, राम के बाल्यकाल की ऐसी लीलाओं का साक्षी रही है, जिन्होंने उन्हें मर्यादापुरुषोत्तम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अयोध्या स्थित श्री राम जन्मभूमि मंदिर, श्री राम के जीवन के प्रति प्रत्येक भारतीय की अटूट आस्था का प्रतीक है। इस मंदिर परिसर की मूर्तियाँ, इसकी दीवारों पर तराशे गए आध्यात्मिक प्रतीकचिह्न और यहां की समग्र वास्तुशैली राम की दिव्यता का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत करती है। यह मंदिर, महान भारत भूमि की आध्यात्मिक ऊर्जा के पुनर्जागरण का केंद्र है।

श्री राम की पवित्र जन्मभूमि पर 70 एकड़ के परिसर में निर्मित श्री राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण में सुप्रीम कोर्ट द्वारा 9 नवंबर, 2019 को गठित श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

परिसर का मुख्य मंदिर प्राचीन नागर वास्तुकला शैली में बनाया गया है। 2.77 एकड़ क्षेत्रफल के विशाल भूखंड में फैले इस मंदिर का निर्माण राजस्थान के भरतपुर जिले की खदानों से उत्खनित गुलाबी बंसी पहाड़पुर पत्थरों से किया गया है।

इस मंदिर के निर्माण में अत्यन्त बारीक शैली का इस्तेमाल किया गया है। इस प्रक्रिया में पत्थरों की कटाई और नक्काशी का काम राजस्थान के पिंडवाड़ा में किया गया। इस कार्य में पूरी सटीकता लाने के लिए सीएनसी प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल किया गया है। यह भव्य मंदिर उन लगभग 1,500 कारीगरों की उत्कृष्ट कारीगरी का बेहतरीन नमूना है, जिन्होंने इस मंदिर को मूर्त रूप प्रदान करने में कठोर परिश्रम किया। राजस्थान में इन पर की गई नक्काशी के बाद, इन पत्थरों को सावधानीपूर्वक पैक किया गया और मंदिर परिसर में पहुंचाया गया, ताकि इन्हें सुनियोजित रूप से इनके लिए निर्धारित स्थान पर प्रयोग किया जा सके।

161.75 फुट ऊंचे, 380 फुट लंबे और 249.5 फुट चौड़े इस तीन मंजिला भव्य मंदिर में एक मुख्य शिखर के अलावा पांच मंडप हैं – नृत्य मंडप, रंग मंडप, गूढ़ मंडप, कीर्तन मंडप और प्रार्थना मंडप। यह मंदिर वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना है। इसके निर्माण में कुल 26,500 गुलाबी बंसी पहाड़पुर पत्थरों का इस्तेमाल हुआ है। बिना स्टील के प्रयोग के डिजाइन किया गया यह मंदिर इस प्रकार तैयार किया गया है कि यह एक हजार वर्ष तक ज्यों–का–त्यों बना रहे। इस मंदिर के निर्माण में इस्तेमाल हुए प्रत्येक पत्थर के भौतिक गुणों की जांच नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रॉक मैकेनिक्स (एनआईआरएम) द्वारा अत्यन्त सावधानीपूर्वक की गई है।

इस मंदिर की संरचनात्मक सुदृढ़ता इस प्रकार की है कि यह जोन 4 के भूकंपीय प्रभावों को झेल सके। इसके भूतल पर 166, प्रथम तल पर 142 और द्वितीय तल पर 82 स्तम्भ हैं। इनमें प्रत्येक तल पर निर्मित मकराना संगमरमर के 6–6 स्तंभ भी शामिल हैं, जिन पर कुल 10,000 से अधिक मूर्तियों और थीमों की महीन नक्काशी की गई है।

इस मंदिर के लकड़ी के कुल 46 द्वारों के लिए महाराष्ट्र वन विभाग से सागौन की लकड़ी मंगाई गई, जिसे नागपुर में तैयार किया गया। भूतल पर लगे 14 द्वारों को सोने की परत से सजाया गया है। लगभग 80,000 वर्ग फुट के क्षेत्रफल वाले इस मंदिर का भव्य फर्श 35 मिमी मोटे सफेद मकराना संगमरमर से निर्मित है, जिसमें 15 मिमी मोटे रंगीन संगमरमर के पत्थर जड़े गए हैं।

इस मंदिर की खास विशेषता यह है कि केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रूड़की द्वारा इसमें एक ऐसी व्यवस्था की गई है, जिससे राम नवमी के पावन दिन सूर्य की किरणें यहां स्थापित श्री राम की मूर्ति के मस्तक पर पड़ेंगी और उनका 'सूर्य तिलक' करेंगी।

श्री राम जन्मभूमि मंदिर में प्राणप्रतिष्ठा का यह अवसर देश के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। इस अनूठे अवसर को और विशेष बनाने के लिए, डाक विभाग ने श्री राम जन्मभूमि मंदिर पर 6 डाक–टिकटों का सेट तैयार किया है। इन डाक–टिकटों के मुद्रण की प्रक्रिया में श्री राम जन्मभूमि के जल और मिट्टी का प्रयोग किया गया है, जोकि श्री राम के चैतन्य भाव और आशीर्वाद से युक्त है। ये डाक–टिकटें चंदन की खुशबू से सुगंधित हैं। इन डाक–टिकटों को दिव्य प्रकाश से प्रदीप्त करने हेतु इस मिनियेचर शीट के कुछ हिस्सों पर गोल्ड फॉयल प्रिंटिंग की गई है।

डाक विभाग, श्री राम जन्मभूमि मंदिर पर 6 स्मारक डाक–टिकटों वाली मिनियेचर शीट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है और प्रत्येक मनुष्य को सदाचारी, सौभाग्यपूर्ण और सार्थक जीवन के लिए श्री राम का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु आमंत्रित करता है।

आभार :

मिनियेचर शीट/एफडीसी/ब्रोशर/ विरूपण कैशे : श्री शंख सामंत

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

Shri Ram Janmbhoomi Temple

Philosophy and morality are closely intertwined in Indian life. Dharma is the Indian word meaning morals and ethics. The word "dharma" derives from the root "dhr," which means to hold. Dharma, therefore, serves to maintain the stability and development of human civilization by acting as a unifying force within it.

Ramo Vighravan Dharma (रामो विग्रहवान् धर्मः) means Shri Ram is Dharma incarnate. Maharishi Valmiki called Shri Ram 'Dharmavigrah' in Ramayana, God incarnated for the welfare of the people. Maharishi Ved Vyas said that the incarnation of Shri Ram was not just for killing demons but for teaching dharma to humans. Patience, forgiveness, control of mind, selflessness, purity, restraint of senses, wisdom, knowledge, truth and mercy, these ten characteristics of dharma have been properly reflected in the entire conduct of Shri Ram.

A fundamental principle of Shri Ram's life conduct is to be aware of one's true self. If a man thinks about his real identity and controls his behavior accordingly, then there can be an appropriate solution to the problems prevalent in the society. Shri Ram's life and his human attributes are highly relevant in modern world to discipline the mind and for continuously developing and changing country.

Shri Ram Janmbhoomi Temple at Ayodhya is unique for its geographical, historical cultural importance and architectural style. The city of Ayodhya, situated on the bank of pious river Saryu is considered a form of Rama. Ayodhya is filled with many childhood life acts of Rama which ultimately played an important role in his transformation as Maryadapurshottam. Shri Ram Janmbhoomi temple at Ayodhya symbolizes the united faith of every Indian in the life of Shri Ram. The sculptures in the temple complex, spiritual symbols on walls and the overall architectural style describes the divinity of Rama. This temple is the center of renaissance of the spiritual energy of great Bharat.

The construction of the Shri Ram Janmbhoomi Temple, situated on the sacred birthplace of Shri Ram within a 70-acre complex, is a significant endeavour undertaken by the Shri Ram Janmbhoomi Teerth Kshetra Trust, formed by the Supreme Court on November 9, 2019.

The main temple is designed in ancient Nagara style of Architecture. The temple is constructed with Pink Bansi Paharpur stones from the mines in Bharatpur district, Rajasthan & spans a vast area of 2.77 acres.

The construction involves intricate processes, including cutting and carving of stones at Pindwara in Rajasthan, utilizing advanced CNC technology for precision. The final finishing, a testament to craftsmanship, is meticulously done by a team of approximately 1,500 artisans. The stones, after carving, are carefully packed and transported back to the